।। किरती दान को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ किरती दान को अंग लिखंते ||

|| कवत्त ||

चाकर चारण भाट || ओर ओघायत सारा ||
बोहो बिध व्हे आधीन || निवसो चले बिचारा ||
ज्याँ कीनो पुन अेह || दान किरत सुण होई ||
जामण मरणो परण || बैन बेटी कहुँ तोई ||
सुखराम दास अे पुन तो || घर का घर मेंई होय ||
प्रम धर्म अेको नहीं || संग न चाले कोय || १ ||

जो दान करते है । उससे उसके नौकर और चारण भाट तथा अंमलदार ये सभी ही अनेकों प्रकार से आधीन होकर रहते है और झुककर चलते है । संसार में के लोक अपनी किर्ती होने के लिए दान करते है । वें जन्म लेनेके समय याने घर में बच्चा जन्म लिया रहता और माँ–बाप वगैरेह कोई मर गया तो उसके मरने में खर्च करते है और शादी में बहन या लड़की को दान देते है। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ये पुण्य तो घर का घर में ही होता है ऐसे पुण्य से परम़ धर्म तो एक भी नही होता है और ऐसा किर्ती दान का धर्म साथ में भी नही चलता है । ||१||

भाट जाट अर बाणीया , तिनु एक स्वभाव ||
प्रत्म पुंन बछे नही , करे तो कर्मा चाव ||
करे तो कर्मा चाव , देह का किरतब देखे ||
आठ पोहोर गुलाम , ताय बामण कर लेखे ||
सुखराम दास अे पुन्न तो , हरि बेमुख का डाव ||
भाट जाट अर बाणीया , तिनु एक स्वभाव ||
सतगुरु पे माया चढी , सो तो चढ्गी राम ||
बाकी सुखराम कहे , दाम गमाया बेकाम ||२||

किर्ती दान का फल यही संसार में वाह–वाह,शोभा होकर मिल जाता है । यह किर्तीदान करने में भाट,जाट और बनिये इन तीनों का एक स्वभाव है । ये तीनों भाट,जाट व बनिये ये प्रथम तो पुण्य करने की इच्छा ही नही रखते । पुण्य कर्म के चाव से ये तीनों पुण्य करते । ये तीनो जिसको दान देते है उसके शरीर का कर्तव्य देखते है । जिसे पुण्य दे रहे है वह कभी भी हमारे काम आ सकता क्या?कभी भी उससे काम पड़ता क्या?ऐसे उसके शरीर का कर्तव्य देखकर उसे दान देते है । जो आठोप्रहर रात–दिन गुलामगीरी में ही रहता है,गुलामी करता ऐसे ब्राम्हण को दान देते है । ये तो हर रामजी से बिमुख होनेका दाव है ।(दान लेनेवाला ब्राम्हण समझता है कि मैं रात–दिन इनके काम आता हूँ इसलिए मुझे दान दिया है और दान देनेवाला बनिया यह समझता है कि यह रात–दिन मेरी सेवा

करता है इसलिए इसे दान देना ही चाहिए तो ये तो दोनों ही रामजी से बिमुख होने का दाव खेलते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि सतगुरु पे माया चढ गयी सो तो रामजी पे चढ गयी ऐसा समजो । सतगुरु छोड्के अन्य किसीपे भी माया चढ गयी तो वह माया,वह दान बेकाम गमायी ऐसा समजो ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । || २ ||

|| इति किरती दान को अंग संपूरण ||